Sem V paper हिन्दी विभाग 11-12-2020
कबीर डॉ गीता कुमारी 10-00 to 11-40

कबीर की विद्रोह भावना

कबीर प्रगतिशील चेतना से युक्त एक विद्रोही कवि थे। उनका व्यक्तित्व क्रान्तिकारी था। धर्म और समाज के क्षेत्र में व्याप्त पाखण्ड, कुरीतियों, रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों की उन्होंने मुखर आलोचना की और ऊँच-नीच, छुआछूत जैसे सामाजिक कोढ़ को दूर करने के लिए भरसक प्रयास किया।

कबीर लीक छोड़ कर चलने वाले एक कवि थे जिन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों, मिथ्याडम्बरों एवं अनीतिपूर्ण आचरण पर खुलकर प्रहार किए। उन्हें जो ठीक लगा उसे कहने में कोई संकोच नहीं किया। वस्तुतः वे जन्म

से विद्रोही, प्रकृति से समाज सुधारक एवं हृदय से लोक कल्याण के आकांक्षी महामानव थे। उनके व्यक्तित्व का पूरा प्रतिबिम्ब उनके साहित्य में विद्यमान है। वे उपदेशक है तथा मानवमात्र को सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, दया, क्षमा, सन्तोष, उदारता जैसे गुणों को धारण करने का उपदेश देते हैं साथ ही वे समाज में व्याप्त धार्मिक पाखण्ड, जातिप्रथा, मिथ्याडम्बर, रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों का खण्डन करते हैं।

कबीर पढ़े लिखे न थे, किन्तु उनमें अनुभूति की सच्चाई एवं अभिव्यक्ति का ~~खरा~~ खरापन विद्यमान था। वे अनुभवजन्य सत्य पर विश्वास करते थे न कि शास्त्रीय बातों पर। [illegible]

[illegible]

हुए कहते हैं —

तू कहता कागद की लेखी मैं कहता आंखिन की देखी।

मैं कहता सुरझावन हारी, तू राख्या उरझाय रे।

समूचा मध्यकाल अन्धविश्वास, रूढ़ियों पाखण्ड एवं आडम्बर में जकड़ा हुआ था। मुल्ला और पण्डित भोली-भाली जनता को बरगलाकर धार्मिक उन्माद उत्पन्न करते थे और उससे अपना स्वार्थ साधते थे। कबीर यह अच्छी तरह जानते थे, इसलिए उन्होंने जनता को साफ-साफ शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा —

हिन्दू - तुरक की एक राह है

Scanned with CamScanner

साखी मंह बनाई

कबीर का व्यक्तित्व क्रांतिकारी था। उन्होंने आडंबरों के विरुद्ध हल्ला बोल दिया और ऊँच-नीच तथा जाति-पाँति के भेदों को नकारते हुए अपने विद्रोही स्वर की घोषणा की।

कबिरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ,
जो घर जाले आपना, सो चले हमारे साथ॥

अन्धविश्वास और पाखंड के विरोधी कबीर ने मगहर में जाकर इसलिए मृत्यु का वरण किया क्योंकि वे यह दिखा देना चाहते थे कि मुक्ति काशी में ही नहीं मगहर में मरने से भी मिल सकती है।